छोटी दिवाली / नरक चतुर्दशी / रूप चौदस

23/24 अक्टूबर 2022

23 अक्टूबर (रविवार) तिथि : त्रयोदशी 18:03 तक तत्पश्चात चतुर्दशी
23 अक्टूबर (रविवार) नक्षत्र : उत्तराफाल्गुनी 14:34 तक तत्पश्चात हस्त

24 अक्टूबर (सोमवार) तिथि : चतुर्दशी 17:27 तक तत्पश्चात अमावस्या
24 अक्टूबर (सोमवार) नक्षत्र : हस्त 14:42 तक तत्पश्चात चित्रा

छोटी दिवाली महत्व

- नरक चतुर्दशी - भगवान श्री कृष्ण द्वारा नरकासुर का वध
- अभ्यंग स्नान तथा लौकी/अपामार्ग का प्रोक्षण - 24 अक्टूबर 2022 को 05:05 से 06:26
- यम तर्पण - 24 अक्टूबर 2022
- हनुमान जन्मोत्सव - 23 अक्टूबर 2022 रात्रिकाल
- तपस्वी को भोजन, वस्त्रदान - 24 अक्टूबर 2022
- उड़द के पत्ते का साग खाना
- नरकप्राप्ति से बचने और पापों की निवृत्ति हेतु चौमुखा दीप दान - 23 अक्टूबर 2022
- पितरों का पथ प्रदर्शन तथा उनके निमित्त दीपदान - 23 अक्टूबर 2022
- प्रदोषकाल में दीपदान - 23 अक्टूबर 2022
- शिवपूजा - 23 अक्टूबर 2022
- आदित्यहस्त अमृतसिद्धि योग - 23 अक्टूबर 2022 14:35 से

पाँच दिवसीय दीपावली महापर्व का दूसरा दिन कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी है। ऋतशील शर्मा श्रीचण्डी-धाम प्रयागराज के अनुसार मन वचन और कर्म से पवित्र होने के लिये इस दिन नरक का स्मरण किया जाता है जिससे साधक दुष्कर्मों और दुष्ट भावनाओं से बचता है। साथ ही अपनी प्राण शक्ति को सम्वर्धित करने के लिये रुद्रात्मक भगवान हनुमान की आराधना करता है। रात्रि में दुर्बल भावों वाली दरिद्रता रुपी अलक्ष्मी का गमन होता है और विशिष्ट साधक ज्येष्ठा अलक्ष्मी भगवती धूमावती की आराधना की ओर अग्रसर होते है।

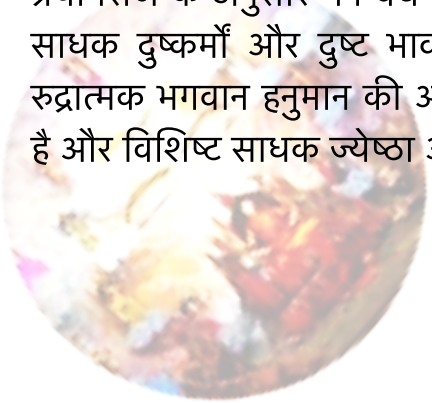

Essence Of Astrology

अभ्यंग स्नान तथा लौकी/अपामार्ग का प्रोक्षण

एक पौराणिक कथा के अनुसार नरक चतुर्दशी के दिन भगवान श्री कृष्ण ने नरकासुर का वध किया था तथा मरते समय नरकासुर ने भगवान श्रीकृष्ण से वर मांगा, कि 'आजके दिन मंगल स्नान करने वाला नरक की यातनाओंसे बच जाए ।' तदनुसार भगवान श्रीकृष्णने उसे वर दिया । इसलिए इस दिन सूर्योदयसे पूर्व अभ्यंगस्नान (https://archive.org/details/Abhyang_Snan) करने की प्रथा है । यदि किसी कारण अरुणोदय के समय अभ्यंग स्नान नहीं किया जा सके तो सूर्योदय के उपरान्त भी यह हो सकता है।

- प्रात: सूर्योदय से पूर्व उठकर शौचादि से निवृत्त हो तेल मालिश, उबटन करें। तिल के तेल में बेसन मिलाकर शरीर पर मलें। उसके बाद एक लौकी (घीया) तथा अपामार्ग को अपने सिर से सात बार घुमायें। घुमाते समय निम्न श्लोक संस्कृत या हिंदी में ही बोलें "***सितालोष्ठसमायुक्तं सकण्टकलदलान्वितं । हर पापमपामार्ग भ्राम्यमाण: पुन: पुन: ॥***" 'हे तुंबी , हे अपामार्ग तुम बारबार फिराए (घुमाए) जाते हुए , मेरे पापों को दूर करो और मेरी कुबुद्धि का नाश कर दो ।' उसके बाद जल से स्नान करें। जल में केसर, गंगाजल मिला लें। इसको अभ्यंग स्नान कहते हैं. "***तैले लक्ष्मी: जले गंगा दीपावल्या चतुर्दशीम्।***" रूप चतुर्दशी के दिन तेल में लक्ष्मी का वास और जल में गंगा की पवित्रता होती है। स्नान के उपरान्त देवताओं का पूजन तथा दीपदान करें। लौकी/अपामार्ग को किसी पेड के नीचे रख आएं (अगर संभव हो तो दक्षिण दिशा में)। अभ्यंग स्नान के पश्चात पत्नी सहित विष्णु मंदिर और कृष्ण मंदिर में भगवान का दर्शन करना अत्यंत पुण्यदायक कहा गया है। इससे व्यक्ति के समस्त पाप कटते है, रूप सौन्दर्य की प्राप्ति होती है (इसलिए इसको रूप चतुर्दशी कहते हैं), शरीर निरोगी होता है तथा नरक का भय दूर होता है।

- अभ्यंग स्नान के बाद सबसे पहले लक्ष्मी विष्णु की प्रतिमा अथवा फोटो को कमलगट्टे की माला और पीले पुष्प अर्पित करें, धन लाभ होगा।

- उसके बाद शुद्ध देसी घी का दीपक और धूप जलाकर निम्न मंत्र का 108 बार जाप करें।

  कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने।
  प्रवर क्लेश नाशाय गोविंन्दाय नमों नम: । ।

स्नान के पश्च्यात यम तर्पण करना चाहिये जिसकी विधि अलग पोस्ट में डालेंगे

हनुमान जन्मोत्सव

आज के दिन कार्तिक (अमान्त आश्विन) कृष्ण चतुर्दशी भौमवार की महानिशा में, स्वाति नक्षत्र, मेष लग्न में अंजनादेवी के गर्भ से रामभक्त हनुमानजी का जन्म हुआ था कुछ शास्त्रों में ऐसा उल्लेख मिलता है। हालांकि चैत्र शुक्ल पूर्णिमा को हनुमान जयंती सर्वविदित है।

"***ऊर्जे कृष्णचतुर्दश्यां भौमे स्वात्यां कपीश्वरः। मेष लग्ने अन्जनागर्भात प्रादुर्भूतः स्वयं शिवा।।***"

"***आश्विनस्यासिते पक्षे भूतायां च महानिशि। भौमवारेञ्जनादेवी हनूमन्तमजीजनत्॥***"

अर्थात् अञ्जनादेवी के गर्भ से हनुमान जी का जन्म हुआ था।

हनूमान भक्त को इस दिन हनुमत पूजन, उपवास करना चाहिए। प्रातः स्नानादि करके "***शौर्यौदार्यधौर्यादिवृद्ध्यर्थं हनुमत्प्रीतिकामनया हनुमज्जयंतीमहोत्सवं करिष्ये***" यह सङ्कल्प करके हनुमान जी यथाविधि षोडशोपचार पूजन करें।

दोपहर में हनूमान् जी पर सिन्दूर में सुगन्धित तेल या घी मिलाकर उसका लेप (चोला) करना चाहिए (कहते है की इसी दिन माता सीता ने हनुमान जी को सिंदूर प्रदान किया था तभी से हनुमान जी पर सिंदूर अर्पित किया जाने लगा है)। तदुपरान्त चाँदी के वर्क लगाने चाहिए । चोला चढ़ाने के उपरान्त हनूमान् जी का षोडशोपचार पूजन करना चाहिए । हनुमान चालीसा, राम रक्षा स्तोत्र, बजरङ्ग बाण, सुंदर कांड का पाठ करें। विशेष कामनाओं की पूर्ति के लिये आज से आरम्भ करके 40 दिन तक नित्य 11 बार हनुमान चालीसा का सम्पुटित पाठ किया जाता है।

इस दिन तुलसी दल पर श्रीराम नाम लिखकर चढ़ाना और लड्डू भोग रखकर रामचरित्र सुनना चाहिये।

तपस्वी को भोजन तथा वस्त्रदान

लिङ्ग पुराण के अनुसार प्रेतचतुर्दशी (कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी) के दिन तपोधन (तपस्वी) शैव वा दूसरों (ब्राह्मण) को भोजन कराने से शिवलोक में प्रतिष्ठित होता है उनको दान देने से यमलोक नहीं जाना पड़ता।

ततः प्रेतचतुर्दश्यां भोजयित्वा तपोधनान्।
शैवान् विप्रांस्त्वथ परान् शिवलोके महीयते।
दानं दत्त्वा तु तेभ्यश्च यमलोकं न गच्छति।।

इस दिन ब्राह्मण को वस्त्रदान भी किया जाता है

उड़द के पत्ते का साग खाना

लिङ्गपुराण और स्कन्दपुराण के अनुसार कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को मनुष्य उड़द के पत्ते का साग खाने से सब पापों से छूट जाता है।

माषपत्रस्य शाकं वै भुक्त्वा तस्मिन्दिने नरः।
प्रेताख्यायां चतुर्दश्यां सर्वपापैः प्रमुच्यते।।

नरक चतुर्दशी तथा दीपदान

- व्रतराज में कहा है कार्तिक अमावस्या और चौदस के दिन प्रदोष के समय दीपदान करने से यम के मार्ग के अन्धकार से मुक्त हो जाता है।
  "अमावस्याचतुर्दश्योः प्रदोषे दीपदानतः । यममार्गान्धकारेभ्यो मुच्यते कार्त्तिके नरः"
- इस दिन चार बातियों वाला एक तेल का दीपक लेकर उसकी चारों बातियों को प्रज्वलित करना चाहिए जिसको घर के बाहर धर्मराज का ध्यान करते हुए पूरब दिशा की ओर मुखं करके रखें जो रातभर जलता रहे ऐसा प्रयास करें। यह चार बत्ती वाला दीपक नरकप्राप्ति से बचने और पापों की निवृत्ति हेतु है। चार बत्तियाँ चारों पुरुषार्थ धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष का प्रतीक हैं। इस दीपक का इसका मंत्र है:
  दत्तो दीपश्चतुर्दश्यां नरकप्रीतये मया।
  चतुर्वर्तिसमायुक्तः सर्वपापपनुत्तये।।
  आज चतुर्दशी के दिन नरक के अभिमानी देवता की प्रसन्नता के लिए तथा समस्त पापों के विनाश के लिए मैं चार बत्तियों वाला चौमुखा दीप अर्पित करता हूँ।
- इस दिन प्रदोष के समय तिल तेल से भरे हुए प्रज्वलित और सुपूजित दीपक लेकर "***यममार्गांधकारनिवारणार्थं चतुर्दशदीपानां दानं करिष्ये***" से सङ्कल्प करके प्रदोष के समय ब्रह्मा विष्णु और शिवजी के मंदिर में एवं घरों में, प्राकार, वाग, वापी, गली, घर के बगीचे, घोड़े हाथी बांधने की जगह इन सबमें दीपक जलाने चाहिये। यह ब्रह्मपुराण का कथन है।
  "ततः प्रदोषसमये दीपान्दद्यात् मनोरमान् ।
  ब्रह्मविष्णुशिवादीनां मठेषु भवनेषु च ।
  प्राकारोद्यानवापीषु प्रतोलीनिष्कुटेषु च ।
  मन्दुरासु विविक्तासु हस्तिशालासु चैव हि"
- 365 बत्ती का दीपक अपने घर के दरवाजे पर या मंदिर में जलावें।

पितरों का पथ प्रदर्शन तथा उनके निमित्त दीपदान

सूर्य के तुला राशि पर रहते चौदस (कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी) अमावस्या के दिन प्रदोषकाल में हाथ में जलती मसाल लेने से पितरों को मार्ग दीखता है। जो प्रेत नरक में भी पड़े हुए हो वो भी इस दिन के व्रत विधान से अपना मार्ग देख लेते हैं इसमें सन्देह नहीं।

तुलासंस्थे सहस्त्रांशौ प्रदोषे भूतदर्शयोः।
उल्काहस्ता नराः कुर्युः पितृणां मार्गदर्शनम्।।
नरकस्थास्तु ये प्रेतास्ते मार्गं तु व्रतात्सदा ।
पश्यंत्येव न संदेहः कार्योऽत्र मुनिपुंगवैः ।।

पितरों के पथ प्रदर्शन का मंत्र

अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम।
उज्जवलज्योतिषा दग्धास्ते यान्तु परमां गतिम्।।
यमलोकं परित्यज्य आगता ये महापथे।
उज्ज्वलज्योतिषा वर्त्म प्रपश्यन्तो व्रजन्तु ते।।

'मेरे कुटुम्ब के वे पितर जिनका दाह-संस्कार हो चुका है, जिनका दाह-संस्कार नहीं हुआ है और जिनका दाह-संस्कार केवल प्रज्वलित अग्नि से हुआ है, परम गति को प्राप्त हों। ऐसे पितर लोग, जो यमलोक से यहाँ महालया श्राद्ध पर आये हैं उन्हें इन उल्काओं से मार्गदर्शन प्राप्त हो और वे अपने लोकों को पहुँच जायँ।'

स्कन्दपुराण के अनुसार जो कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को दीपदान करता है उसके पितर कभी नरक में वास नहीं करते

चतुर्दश्यां च ये दीपान्नरकाय ददंति च।
तेषां पितृगणाः सर्वे नरके न वसंति च।।

नरक चतुर्दशी को संध्या के समय घर की पश्चिमी दिशा में खुले स्थान पर अथवा छत के पश्चिम में 14 दीपक अपने पितरों के निमित्त जलायें। उनके आशीर्वाद से समृद्धि प्राप्त होगी। दीप जलाने के बाद निम्न मंत्र से प्रार्थना करें

नमः पितृभ्यः प्रेतेभ्यो नमो धर्माय विष्णवे।
नमो यमाय रुद्राय कान्तारपतये नमः।।

चौदस में शिवलिङ्ग के समक्ष दीपदान जरूर करें।

शिवपूजा

शिवरात्रि को शिवपूजन नित्य होता है परन्तु विशेषतः अगर इस चतुर्दशी में जो मंगलवार पड़े तो श्री महादेव जी का व्रत और पूजन जरूर करना चाहिये।

अन्य महत्वपूर्ण बातें

- माँ लक्ष्मी की, भगवन गणेश की, नारायण की मिटटी की मूर्ति घर लाकर रखनी चाहिए जिसका पूजन हम दीपावली वाले दिन करेंगे
- भगवान वामन ओर राजा बलि का स्मरण करना चाहिए ऐसे करने से लक्ष्मी जी स्थायी रूप से आपके घर में निवास करती है ।
- छोटी दीपावाली को प्रातःकाल हाथी को गन्ना या मीठा खिलाने से अधिक तकलीफों से मुक्ति मिलती है।

Essence Of Astrology
http://essenceofastro.blogspot.com/
https://www.facebook.com/essenceofastro

Essence Of Astrology